प्रश्न:

'राजमहल की पहाडियां संथाल किसानों के खून से तर हो गयी थी।' इस कथन के प्रकाश में संथाल विद्रोह के प्रमुख कारणों पर चर्चा कीजिये। साथ ही इस आदिवासी विद्रोह के घटनाक्रम पर चर्चा करते हुए यह भी बताये कि इसे कैसे दबाया गया था।

सामान्य अध्यन प्रश्न पत्र: I

विषय: आधुनिक भारतीय इतिहास, स्वतंत्रता पूर्व आदिवासी विद्रोहों.

मॉडल उत्तर:

संथाल विद्रोह (1855-1856)

- संथाल आदिवासियों का एक समूह है जो काफी हद तक बिहार में केंद्रित हैं। वे मुख्य रूप से कृषक थे। पहला किसान आंदोलन है जो भारत में 1855-56 का संथाल विद्रोह के रूप में शुरू हुआ था। यह विद्रोह 1793 के स्थायी भूमि बंदोबस्त के विरोद में मूल रूप से शुरू हुआ था।
- स्थाई बंदोबस्त की प्रणाली जो अंग्रेजों द्वारा शुरू की गयी थी ने संथालों से सदियों पुरानी जमीन को छीन लिए जिस पर वह खेती किया करते थे।
- संथाल: दमन-ए-कोह = भागलपुर और राजमहल के बीच क्षेत्र में रहने वाले लोग
- विद्रोह = को संथाल भाषा में 'हूल' कहा जाता था।

यह देश के एक सबसे भारी विद्रोह में से था

- दिकू "बाहर के लोग" निष्कासित करने का एक बड़ा प्रयास था।
- विदेशी शासन के पूर्ण 'विनाश' की घोषणा इसके अन्तर्गत की गयी थी।

सामाजिक स्थिति जिन्होंने इस विद्रोह को उकसाया था:

- जमींदार, पुलिस, राजस्व व अदालतो एवं जबरन वसूली, दमनकारी अपकर्षण, को बढ़ाव दिया था संपत्ति, दुरुपयोग और व्यक्तिगत हिंसा जबरन बेदखली और क्षुद्र क्रूरता की एक किस्म की एक संयुक्त प्रणाली के प्रयोग ने भी इसे बढ़ावा दिया था।
- ऋणों पर ब्याज का अतरिक्त भार (50 - 500%)
- बाजार में गलत माध्यमों का प्रयोग
- अमीर द्वारा गरीब की जमीन पर जानभूझकर दयाहीन अतिचार उनके मवेशी,, टट्टू और हाथियों द्वारा उनकी खड़ी फसलों को नुक्सान पहुंचा देना।

यह आंदोलन कैसे भड़का था?

- 1854 तक, आदिवासियों के मुखिया, मांझी और परगान, ने आपस में मिलकर विद्रोही की संभावना पर चर्चा करना शुरू कर दिया था।

- जमींदार और साहूकारों द्वारा लूट के मामलों काफी बढ़ गए थे।
- 30 जून, 1855- आदिवासी नेताओं 6000 संथाल की एक सभा बुलाई थी, जिसके अन्तर्गत बांधीगढ़ी में 400 गांवों, का प्रतिनिधित्व किया गया था।
- उन्होंने संयुक्त विद्रोह करने का फैसला किया जिसमे दिकु को एक बार में ही बाहर निकालने का फैसला लिया गया तथा सतयुग 'सत्य के शासनकाल,' को स्थापित करने का फैसला किया गया।

जादू में विश्वास

- वे मानते थे कि उनके कार्यों को भगवान का आशीर्वाद प्राप्त था। सीधू और कान्हू, जो मुख्य विद्रोही नेता थे ने दावा किया कि ठाकुर (भगवान) ने उन के साथ संपर्क कर उन लोगों के साथ सूचित किया और उन्हें हथियार उठाने और स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए कहा है।

गैर आदिवासी मदद का मिलना

- विद्रोह को गैर-आदिवासी और गरीब दिकू ने एक बड़ी संख्या के द्वारा मदद की थी।
- ग्वालों ने कई सेवाओं के साथ विद्रोहियों मदद की;
- लोहार ने विद्रोहीयों के लिए हथियार बना कर बड़े पैमाने पर मदद की थी।

दमन:

- सरकार को विद्रोह के स्तर का एहसास हुआ और उन्होंने एक विशेष सैन्य अभियान का आयोजन किया
- कई रेजीमेंटों जुटाए गए, मार्शल लॉ घोषित किया गया, विभिन्न मुख्य नेताओं को पकड़ने के लिए 10,000 तक की पुरस्कार की पेशकश कीकी गयी थी।
- विद्रोह को बेरहमी से कुचल दिया गया था।
- 15,000 से अधिक संथाल मारे गए थे जबकि दसियों गांवों को नष्ट कर दिया गया था।
- सिधू को पकड़ लिया गया उसे देशद्रोही घोसित कर अगस्त 1855 में उसकी हत्या कर दी गयी।
- कान्हू फरवरी 1866 में विद्रोह के अंतिम दिनों में गिरफ्तार किया गया था।
- 'राजमहल की पहाडिया संथाल किसानों के खून से लथपथ हो गयी थी।'

संकलन : संग्राम सिंह

CHANAKYA IAS ACADEMY Nurturing Leaders of Tomorrow